Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC-108

Paper Title: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य

Unit: 02

Module Name: कृष्णा सोबती की कहानी- सिक्का बदल गया

Name of the Presenter: Ms. Deepali Sutar

NOTES-

कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 को गुजरात में हुआ था, जिसका एक हिस्सा भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान में चला गया। कृष्णा सोबती ने दूसरे महायुद्ध के दौरान लिखना प्रारंभ किया था। उपन्यास, कहानी, संस्मरण, आलोचना जैसी विधाओं में उन्होंने लेखन किया है। *'नफीसा'* और *'लामा'* (1944) उनकी शुरुआती कहानियां हैं जो कि 1980 में आये *'बादलों के घेरे'* कहानी संग्रह में संकलित हैं। **यारों के यार, तिन पहाड़, ऐ लड़की, डार से बिछुड़ी** (लंबी कहानियां), उपन्यास- **मित्रो मरजानी (1967), सूरजमुखी अंधेरे के (1972), जिन्दगीनामा (1979), दिलोदानिश (1993), समय सरगम (2000), गुजरात से पाकिस्तान गुजरात से हिंदुस्तान (2017), जैनी महरबान सिंह, चन्ना** उनकी प्रमुख कृतियां हैं। *हम हशमत*(चार भागों में) , *सोबती एक सोहबत* यह उनके संस्मरण हैं। *बुद्ध का कमंडल लद्दाख :-* यात्रा संस्मरण। *मुक्तिबोध एक व्यक्तित्व सही की : तलाश में-* आलोचना।

सम्मान/पुरस्कार- साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य शिरोमणि सम्मान, शलाका सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, हिंदी अकादमी अवार्ड, कथा चूड़ामणि पुरस्कार, महत्तर सदस्य साहित्य अकादमी -, ज्ञानपीठ पुरस्कार (2017)

1947 में जब हमें आजादी मिली तब एक तरफ़ लोग जश्न मना रहे थे वहीं दूसरी तरफ़ समाज का एक हिस्सा ऐसा था जिसे विभाजन के कठोर दर्द से गुज़रना पड़ा। देश तो बंट गया लेकिन उसके साथ-साथ लोगों के दिलों का भी बंटवारा हो गया। परिणाम यह हुआ कि विभाजन ने सांप्रदायिक दंगों, लोगों के मन में एक दूसरे के प्रति नफ़रत, हिंदू-मुसलमान दोनों धर्मों के बीच कट्टरता, आदि को जन्म दिया। जब देश पाकिस्तान में बंट गया तब कई सारे लोग अपने परिवारवालों से बिछड़ गये। हिंदुओं को भारत और मुसलमानों को पाकिस्तान भेजा जाने लगा। कई लोगों के साथ ज़बरदस्ती भी हुई। जिसके चलते हिंदू और मुसलमानों के बीच भाईचारा खत्म होने लगा। दोनों के बीच कट्टरता बढ़ गयी। आज भी हमें विभाजन के उन परिणामों को भूगतना पड़ रहा है। एक दूसरे के प्रति हम लोगों के मन में नफ़रत का, असहिष्णुता का भाव बढ़ रहा है। इन्सानियत धीरे-धीरे मरने लग गयी है। विभाजन के उस दर्द को वही लोग समझ सकते हैं जो उस दौर से गुज़र चुके हैं। हिंदी साहित्य में विभाजन की पृष्ठभूमि पर अनेक कहानियां लिखी गयी हैं। जैसे- भीष्म साहनी की अमृतसर आ गया, अज्ञेय की मुस्लिम मुस्लिम भाई भाई, शरणदाता, आदि। कृष्णा सोबती ने विभाजन की उस त्रासदी को भली-भांति देखा था, अनुभव किया था। 'सिक्का बदल गया' में उसी विभाजन की दर्द भरी कहानी को व्यक्त किया है।

विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कृष्णा सोबती की यह कहानी 1948 में प्रतीक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी विधवा नारी शाहनी की विवशता को दर्शाती है। शाहनी के पति शाहजी का देहांत हो चुका है। कहानी की शुरुआत में शाहनी पौ फटने पर चनाब में नहाने जाती है। अचानक उसके मन कोई डर घर कर लेता है। आज उसके साथ कोई नहीं है, न उसके शाहजी और न ही उसका बेटा। वह अकेली है। 'जम्मीवाला' कुआं, मीलों फैले खेत, दूर गांव में फैली ज़मीनों पर नज़र दौड़ाती है और अपनत्व को महसूस करने लगती है। मन अस्वस्थ होने के कारण वह शेरा के घर चली जाती है। शेरा शाहजी का पहले सेवक था, जिसकी मां के देहांत के बाद वह उन्हीं के यहां पलकर बड़ा हुआ। शेरा

इस सोच में था कि शाहनी की ऊंची हवेली की अंधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चांदी की संदूकचियां उठाएगा। उसके मन में हिंसा का भाव पैदा हो चुका था। शाहजी ने उनके ही लोगों से सूद वसूल करके ह सोने की बोरियां भरी थी। शाहनी शेरा से कहती है कि शायद पिछली रात को कुल्लूवाल के लोग आए थे। अगर शाहजी होते तो बीच-बचाव करते। शेरा उसे हवेली छोड़ने जाता है। इस दौरान शेरा सोच पड़ जाता है कि आखिर शाहनी ने उनका क्या बिगाड़ा है? उसे मारकर उसे क्या मिलेगा ?

आगे कहानी में रसूली की आवाज़ सुनाई देती है कि ट्रकें आ गयी हैं। योजना के अनुसार शाहनी हवेली छोड़कर जाना पड़ेगा। आज उसके सामने पूरा गांव खड़ा है। जो कभी उसके इशारों पर नाचते थे, आज उनमें से कोई अपना नज़र नहीं आ रहा है। बेगू पटवारी और मसीत के मुल्ला इस्माइल उससे नज़रे नहीं मिला पाते हैं। भीड़ की भीड़ उसके सामने हैं लेकिन उसमें से सब लोग उसे पराये लग रहे हैं। हवेली को लूटने की ख़बर उसे पहले से ही थी। वह सबकुछ जानकर भी अनजान बनती है- *'शाहनी का घर से निकलना छोटी-सी बात नहीं। गांव का गांव खड़ा है हवेली के दरवाजे से लेकर उस दारे तक जिसे शाहजी ने अपने पुत्र की शादी में बनवा दिया था। तब से लेकर आज तक सब फैसले, सब मशविरे यहीं होते रहे हैं। इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात भी यहीं सोची गयी थी! यह नहीं कि शाहनी कुछ न जानती हो। वह जानकर भी अनजान बनी रही। उसने कभी बैर नहीं जाना। किसी का बुरा नहीं किया। लेकिन बूढ़ी शाहनी यह नहीं जानती कि सिक्का बदल गया है...'*

थानेदार दाउद खां उसके पास आकर कहता है कि देर हो रही है। अपने साथ अगर कुछ ले जाना चाहती हो ले लो। कुछ साथ बांध लिया है...सोना-चांदी? सोना-चांदी सुनकर शाहनी कहती है कि वह सब कुछ तुम लोगों लिए है। मेरा सोना तो एक एक ज़मीन में बिछा हुआ है। शाहनी अपने साथ कुछ भी ले जाने से इंकार कर देती है। न सोना-चांदी न नकदी। वह किसी को भला-बुरा नहीं कहती। क्योंकि उसे इस आग अंदेशा पहले से ही था। शेरा आकर कहता है कि देर हो रही है। यह सुनकर वह चौंक जाती है। उसका मन को ठेस पहुंचती है कि

उसे अब अपने घर में खड़े होकर यह सुनना पड़ रहा है। लड़खड़ाती बूढ़ी शाहनी आंखों से आंसू पोंछते हुए घर की ड्योढ़ी पार करती है। वह फिर कभी इस ऊंची हवेली को नहीं देख पायेगी। वह दोनों हाथ जोड़कर अपना अंतिम दर्शन, अपना अंतिम प्रणाम करती है। शाहनी ट्रक की ओर चल देती है, उसका ऊंचा-सा भवन पीछे छूट जाता है। जाते-जाते शाहनी सबको आशिर्वाद देती है। शेरा उसके पांव छूकर कहता है- *"शाहनी कोई कुछ कर नहीं सका। राज भी पलट गया"* शाहनी अपने कांपते हुए हाथ उसके सर पर रखकर कहती है- *"तैनू भाग जगण चन्ना!"*

रात को कैंप पहुंचकर भी उसके मन में वह बातें दोहराने लगती है कि राज पलट गया, सिक्का बदल गया। शाहनी के लिए सिक्का नहीं बदलेगा क्योंकि वह उसे गांव में ही छोड़कर आयी है। वह कहती है कि 'सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आयी...'

इस प्रकार कृष्णा सोबती ने इस कहानी में विभाजन के कारण बदलते और बिगड़ते मानव मूल्यों का चित्रण किया है। लोगों के मन में धार्मिक कट्टरता के कारण लोगों के बीच बढ़ती दूरियां, खत्म हो रही मानवता, नफ़रत आदि को दर्शाया है। सिक्का बदलने से तात्पर्य है लोग बदल गये हैं। बंटवारे के बाद लोग अपनत्व को भूल गये हैं। अपने ही लोगों के साथ बूरा बर्ताव करने लग गये हैं। एकता, भाईचारा, मानवता, प्यार अब सिर्फ कहने के लिए रह गया है। कहानी में शाहनी के साथ जिस प्रकार से शेरा, दाऊद खां और अन्य गांववालों ने व्यवहार किया है बताता है कि विभाजन ने लोगों को संवेदनहीन बना दिया है।